

वो भी शाकाहारी थे

PAGE NO.:

गर्व था भारत भूमि को कि महावीर की माता हूँ ।
राम, कृष्ण और नानक जैसे तीरों की यशगाथा हूँ ॥

कंद, मूल खाने वालों से माँसाहारी इतरते थे ।
पोरस जैसे शूरावीर को तमन सिकंदर करते थे ॥

चाँदित वर्षों तक खूँखाही वन में जिसका धाम था ।
मन-मंदिर में बसने वाला शाकाहारी राम था ॥
पादते हैं वो खा सकते थे माँस पशु के ढेरों में ।
लेकिन उनको प्रेम मिला शवरी के झूठे वरों में ॥

मखन-मोर मुरारी थे, शत्रु पर विगारी थे ।
चक्र-सुंदरशन धारी थे, गीर्वधन पर भारी थे ।
मुरली से वरा करने वाले गिरधर शाकाहारी थे ॥

करते हो तुम बातें कैसे मस्जिद-मंदिर राम की ।
खूनी वनकर लाज लूट ली हमन उनके नाम की ॥
उठा जरा-तुम बढकर देखो गौतमय इतिहास की ।
आदम से गांधी तक फैले इस नीले आकाश को,
प्रेम, त्याग और दया भाव की फसल जहाँ पर
अगती है, सोने की चिड़िया नदलों में सना
वाँजरा चुगती है ॥

आँखें कितनी रीती हैं जब आंली अपनी कँटती है ।
सोचो उस तड़पन की दृढ़ जब जिस्म पे आरी
चलती है ॥

वैवसता तुम पुरुष की देखी, वचन के आधार नहीं ।
जीते - जी वो काँटा जाए, उस पीड़ा का पार नहीं ॥

खाने से विद्यार्थी ^{पहले} चीख जीव की सुन लेते ।
कल्पना के वश दीकट, तुम भी गिर-गिरनार को
चुन लेते हैं । - २

धन्यवाद !